Tip of the Day

जिस प्रकार तराजू की डण्डी थोड़े में उपर चली जाती हैं और थोड़े में ही नीचे हो जाती हैं वैसे दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति भी अपनी चेष्टाऐं जारी रखते हैं । वो थोड़े में ही उपर नीचे हो जाता हैं अर्थात जिसको कुपित होने में और प्रसन्न होने अधिक समय नही लगता हैं । यदि अचानक ही और एक बार भी सज्जन पुरुष की संगति मिल जाये तो वह अक्षय होती हैं अर्थात उसके सदगुण कभी भुलाये नही जा सकते हैं और एसी संगति बार बार ना भी हो तो भी सदगुण मन में अपना स्थान बना लेते हैं ।

देशवासियों पर राजा का, गृहस्थों पर भिक्षुकों का, कामियों पर गणिकाओं का, जनसाधारण पर कारीगरों का प्रभाव रहता हैं । चालबाज लोग साम, दाम, दण्ड और भेद नितियों का जाल फैलाये मूर्खो की उसी प्रकार प्रतिक्षा करते हैं जैसे खेत खलिहानों में उगने वाले धान्य बरसात के मेघों का करते हैं क्योंकि ये सब उनकी शक्ति से जीवन धारण करते हैं । बहरहाल ईश्वर की अपनी माया हेती हैं इसलिये कहा हैं कि सर्पों और पराया धन हड़पने वालों के अभिप्राय कभी सिध्द नही होते हैं जिससे ये संसार आज टिका हुआ हैं । शिवजी का सर्प भूख से पीड़ीत होकर गणेशजी के चूहें को खाने की ईच्छा करता हैं और उसी सर्प को कार्तिकेय का मोर खाना चाहता हैं । उसी मोर को पार्वतीजी का सिंह खा लेना चाहता हैं । इस प्रकार जब शंकरजी के घर में ही आपस की घटना इस प्रकार घटित होती हैं तो दूसरों के घर का तो कहना ही क्या । हालाकि धन सब प्रकार के दुखों को दूर करने की सामर्थ्य रखता हैं परन्तु धन कमाने से दुख होता हैं, कमायें हुऐ धन की रक्षा करने में दुख होता हैं, आमदनी में दुख होता हैं और धन को खर्च करने में भी दुख होता हैं अंत एसे धन को धिक्कार हैं । फिर भी कहा हैं कि, जो अभिलाषारहित हैं वो धन का अधिकारी नही हो सकता हैं, संभोग की अभिलाषा से रहित व्यक्ति श्रगांरप्रिय नही हो सकता हैं, मूर्ख कभी प्रिय नही बोल सकता हैं और साफ साफ बात करने वाला कभी ठग नही हो सकता हैं । जो व्यक्ति आयु की पहली अवस्था में शॉन्त हैं असल में वही शॉन्त कहा जा सकता हैं आयु के अंत की अवस्था में हर कोई शॉन्त हो जाता हैं । इसलिये कि धातुओं के क्षीण हो जाने पर कौन शॉन्त नही हो जाता हैं ।

सत्पुरुषों के चित में पहले वृध्दावस्था आती हैं और बाद में उनके शरीर में वृध्दावस्था आती हैं परन्तु दुष्टों के शरीर में वृध दावस्था आने पर भी उनके चित में वृध्दावस्था नही आती हैं । शूद्र हो याँ अन्य कोई, यंहा तक कि चाण्डाल भी जटाधारण करके शिवमन्त्र से दीक्षित हो जाये और शरीर पर भस्म लगा ले तो शिव स्वरुप हो जाता हैं । अनिति से समृध्दि, परदेश में रहने से स्नेह, अहंकार से स्त्री, देखभाल ना करने से खेती और त्याग तथा लापरवाही से धन का नाश हो जाता हैं । जो अतिथि सन्ध या को सूर्यास्त के समय गृहस्थों के घर आ पहुचें उसकी सेवा करने से गृहस्थ देवतातुल्य हो जाते हैं । अतिथि का स्वागत करने से अग्नि, आसन प्रदान करने से इन्द्र, चरण धोने से पितर और अर्ध्य देने से महादेवजी प्रसन्न होते हैं ।